

॥ श्रीमद्भगवद्गीता विवेचन सारसंक्षेप ॥

अध्याय 15: पुरुषोत्तमयोग

1/2 (श्लोक 1-8), शनिवार, 06 मे 2023

ब्याख्याकार: गीता प्रवीण माननीया रूपल शुक्ला महाशया

इউटिउव लिंक: <https://youtu.be/kBeGD2jZoWo>

अश्वत्थ गाछ - दृश्यमान ओ अदृश्य सृष्टिर् सृष्टिकर्तार धाम

१५तम अध्यायैर नाम पुरुषोत्तम योग। दीप प्रज्ज्वलन ओ प्रार्थनार माध्यमे, गुरुदेवके प्रणाम जानिये आजकेर विवेचन शुरु हल। 'लार्न गीता' नामक एही यात्रा शुरु हयैछिल द्वादश अध्याय दिये, येथाने परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण भक्तैर लक्षण वर्णना करैछेन।

भगवद्गीतार माहात्र्य

आमरा सौभाग्यवान ये आमार्देर एही यात्रार जन्य मनोनीत करा हयैछे। आमार्देर दायित्व गीतार शिक्षा जीवने प्रयोग करा।

आदि शङ्कराचार्य निजेर भाष्ये येमन बलेछेन -

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्मैष ~ आमरा निजेदेर जीवनेर पथनिर्देशक नई, भगवानेर इच्छातेई सब हय।

आमरा जानि, बला सहज किन्तु करा कठिन। अर्जुनेर उदाहरणई धरि, याके गीतार प्रथम अध्याये धर्मसंकटे देखानो हयैछे। धर्म रक्षा करते गेले ताके परिवार ओ गुरुर विरुद्धे अन्न धरते हवे।

अर्जुन उओयाच

दृष्ट्वेमं (म्) स्वजनं(ङ्) कृष्ण, युयुत्सुं (म्) समुपस्थितम्॥1.28॥

सीदन्ति मम गात्राणी, मुखं (ङ्) च परिशुष्यति।

बेपथुश्च शरीरे मे, रोमहर्षश्च जायते॥1.29॥

गांतीबं(म्) प्रंसते हस्तात्, त्वक्चैव परिदह्यते।

न च शक्नोम्यवस्थातुं(म्), भ्रमतीव च मे मनः॥1.30॥

प्रथम अध्यायैर एही श्लोके अर्जुनेर कष्ट देखानो हयैछे येथाने उनि बलेछेन - आमार् मुख शुकिये गेछे, शरीर काँपछे, गाये काँटा दिछे। हात थेके गांतीब परे याछे, त्वक ज्वाला करछे। आमि दाँडिये थाकते पारछि ना, चिन्ताओ करते पारछि ना।

**कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंयुतचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेहहं शधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥2.7॥**

परर अध्यायेर १म श्लोके अर्जून भगवानके बलेन तार मार्गदर्शन करते याते तिनि निजेर मङ्गलेर जन्य सिद्धान्त निते पारेन। "आमि कापुरुषताय ओ मोहे आच्छन्न। आमि कर्तव्येर सिद्धान्त निते अक्कम। आमि आपनार काछे एसेछि। आमि तोमार शिष्य। आमाय बलो कि आमार जन्य मङ्गल।

द्वितीय अध्यायेर सप्तम श्लोके अर्जून भगवानके विनति करे बलछेन, आमि मोहाच्छन्न हये पडेछि एवं सेई दुर्बलतार प्रभावे आमि एखन किंकर्तव्यविमूढ हयेछि एवं आमार कर्तव्य सन्धक्के विभ्रान्त हयेछि। एई अवस्थाय आमि आपनাকে जिज्ञासा करछि, एखन कि करा आमार पक्के श्रेयस्कर, ता आमाके बलून। एखन आमि आपनार शिष्य एवं सर्वतोभावे आपनार शरणागत। दया करे आपनि आमाके निर्देश दिन।

**अशोचान्नशोचस्त्रुं प्रज्जवादांश्च भाषसे ।
गतसूनगतसूश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥2.11॥**

अर्जूनके मार्गदर्शन करते भगवान भगवदपीतार वाणी बललेन, द्वितीय अध्यायेर एकादशतम श्लोक थेके वास्तुवेर प्रकृति दिये।

भगवान बललेन - तूमि विजेर मतो कथा बलछे, किन्तु या निये दुःख करछे, ता दुःखेर योग्य नय। ज्ञानी मानुषजन जीवित वा मृत कारो जन्यई दुःख करेन ना।

परम पूज्य स्वामीजी बलेछेन ये यदि वेद श्रुति (या श्रुत) हय, ताहले गीता हल भगवानेर वाणी। आमादेर सौभाग्य ये आमरा गीतार द्वारा चालित। कारण गीतार वाणीके अनुसरण करले भगवानके अनुसरण करा हय।

पुरुषोत्तम योग

१५ अध्याये पुरुषोत्तम योगेर वर्णना आछे याते भगवान निजेर पुरुषोत्तम स्वरूपेर कथा बलेछेन(एखाने पुरुषोत्तमेर अर्थ ब्रह्म, येमन वेदे वर्णित यार अव्याप्तुेर थेके उ९पत्ति वा से निजेई अव्याप्तु)। उनि संसारेर सम्पर्के कि बुवियेछेन याते अर्जून सेटाके बुवे तार थेके अनासक्त हते पारे।

एई अध्याये एई सकल विषये आलोचना हयेछे -

- संसारेर स्वरूप (चर-अचर संसारेर वर्णना), संसार बृह
- परमात्मार वासस्थान - परम धाम
- परमात्मार स्वरूप
- जीवात्मा, संसार आर भवनेर मध्ये सम्पर्क
- परमेश्वर प्राप्ति
- सृष्टिेर स्वरूप
- कर्म ओ कर्मफल

१५ अध्यायेर प्रथमार्धे भगवान संसार बृह्णेर स्वरूप या हिन्दू धर्मेर साथे ओतप्रोत भावे जडित, एकाधिक शास्त्रे वर्णित, तार वर्णना करेछेन।

एई अध्यायेर प्रथम दुटि श्लोके संसाररूपी बृह्णेर (सृष्टिेर चराचर भाग) कथा विस्तारित भावे बला हयेछे।

শ্রীভগবানুবাচ

উর্ধ্বমূলমধঃ(শ্) শাখম্, অশ্বথঃ(ম্) প্রাহুরব্যয়ম্।
ছন্দাংসি যস্য পর্ণানি, যন্তঃ(বঁ) বেদ স বেদবিৎ ॥15.1॥

শ্রীভগবান বললেন –উর্ধ্ব মূলযুক্ত এবং নিম্ন শাখাবিশিষ্ট যে জগৎরূপ অশ্বথবৃক্ষকে (প্রবাহরূপে) অব্যয় বলা হয় এবং বেদ যার পত্রসমূহ, সেই জগৎবৃক্ষকে যিনি জানেন, তিনিই বেদবিৎ ॥ ১১ ॥

প্রথম ২ শ্লোকে আমরা দুটি বিষয়ে জানতে পারি -

- সংসারবৃক্ষ (জীবনের বৃক্ষ)
- ৩ গুণের ভূমিকা (সত্ত্ব, রজস, তামস)

সংসার বৃক্ষের একটি ছবি নিচে দেওয়া হলো -

<https://drive.google.com/file/d/1DomvUB99szcepK0rI5kICQW0V7sP5wJ0/view?usp=drivesdk>

সংসার ও সংসারবৃক্ষের প্রকৃতি -

জগতের সংস্কৃত শব্দ সংসারের সংজ্ঞা **সংসারতীতি সংসারঃ** - যা ক্রমাগত বদলাচ্ছে।

এখানে সংসারের প্রকৃতিকে সংসারবৃক্ষ বলে বর্ণনা করা হয়েছে, চিরন্তন অশ্বথ গাছ, যার শিকড় ওপরে, ডাল নিচে। অশ্বথ মানে যা চিরপরিবর্তনশীল, যা ক্রমাগত বদলাচ্ছে।

সংসারবৃক্ষ: অশ্বথ

জীবন বৃক্ষকে অনেক জায়গায় উল্লেখ করা হয়েছে। ভগবান নিজে তার কথা ভগবদগীতায় বলেছেন। ভগবান বলেছেন সংসার এক উল্টো গাছের মতো - যার শিকড় ওপরে, ডালপালা, পাতা নিচে।

The Sa□ s□ rav□ k□ a is described as:

- উর্ধ্বমূলম্ (শিকড় ওপরে)
- অধঃ শাখম্ (ডালপালা নিচে)
- অশ্বথঃ প্রাহুরব্যয়ম্ (ক্রমাগত বিবর্তিত)
- পর্ণানি (পাতা)
- প্রবালাঃ (কুঁড়ি)

উর্ধ্বমূলম্ (শিকড় ওপরে)

তার শিকড়ে কোনো ভিত নেই, কিন্তু তা দাঁড়িয়ে আছে। তার উৎস ভগবান, যিনি বৃক্ষকে পুষ্ট ও চালিত রেখেছেন।

অধঃ শাখম্ (ডালপালা নিচে)

ডালপালা কর্মফলের প্রতীক। তা নিচের দিকে মুখ করে মানে মানুষ সংসারে আবদ্ধ তার কর্মের দ্বারা।

অশ্বথঃ (ক্রমাগত বিবর্তিত) প্রাহুরব্যয়ম্ (যা ধ্বংস করা যায়না)

যে গাছকে ভগবান অশ্বথ বলেছেন (অ- না, শ্ব - আগামীকাল, থ-থাকে) । আদি শঙ্করাচার্য এই নামের মানে

বলেছেন যা 'কাল একই থাকে না' যেমন এই বিশ্ব যার ধ্বংস নেই কিন্তু তা ক্রমাগত বদলে যাচ্ছে।

পর্ণানি (পাতা)

এর পাতাগুলি ছন্দ। ছন্দের তিনটি আলাদা অর্থ আছে - কাব্য (ছন্দ শাস্ত্র), জ্ঞান ও বেদ। এখানে তার মানে জ্ঞান বা বেদ দুটোই হতে পারে। যে এই সংসারবৃক্ষকে জানে, তাকে বলে বেদবিৎ।

প্রবালাঃ (কুঁড়ি)

যে ভাবে জল গাছের সেচন করে, তিনটি গুণ এই প্রকৃতির জড় জগতকে সেচন করে। এই তিনটি গুণের দ্বারা তৈরি ইন্দ্রিয় এই সংসার বৃক্ষের কুঁড়ি, যা ফুটে আরো বিস্তৃত হয়। এই কুঁড়ি ফুটে নতুন আশা-আকাঙ্ক্ষার জন্ম দেয়।

এই ভাবে অশ্বথ গাছের পাতা আত্মার জাগতিক অস্তিত্ব বজায় রাখে আর জন্মমৃত্যুর চক্রে চালিত করতে থাকে। এটা ক্রমাগত হওয়ার জন্য আত্মা শুরু বা শেষের উপলব্ধি করতে পারে না।

তাই এই সংসারবৃক্ষ অব্যয় বা জন্ম মৃত্যু চক্র অবিচ্ছিন্ন।

15.2

অধশ্চাধ্বং(ম্) প্রসৃতান্তস্য শাখা, গুণপ্রবৃদ্ধা বিষয়প্রবালাঃ। অধশ্চ মূলান্যনুসন্ততানি, কর্মানুবন্ধীনি মনুষ্যালোকে।।2।।

ওই জগৎ-বৃক্ষের গুণাদির (সত্ত্ব, রজঃ ও তমের) সাহায্যে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত ও বিষয়রূপ পল্লববিশিষ্ট শাখাগুলি নীচে, মধ্যভাগে ও উর্ধ্ব সর্বত্র বিস্তৃত। মনুষ্যালোকে কর্মানুসারে বন্ধনকারী মূল নিম্নে ও উর্ধ্বভাগে সর্বলোকে পরিব্যাপ্ত হয়ে চলেছে। ২ ॥

প্রকৃতির গুণসমূহ

সত্ত্বগুণ, রজোগুণ এবং তমোগুণ

এই অশ্বথ বৃক্ষটি তিনটি গুণ (জাগতিক বা পার্থিব প্রবৃত্তি) দ্বারা পুষ্ট হয় যথা সত্ত্ব (শুদ্ধ, পবিত্র), রজ (ক্রিয়ালীলা), এবং তম (অন্ধকার, বিনাশ)। সমস্ত প্রাণী এই তিনটি গুণ ধারণ করে। আমাদের প্রবৃত্তিতে যে গুণটি অন্য দুটি গুণের তুলনায় অধিক মাত্রায় থাকে, সেই গুণটিই প্রভাবশালী হয়।

সত্ত্বগুণ

সত্ত্বগুণ শুদ্ধতা, জ্ঞান এবং সমন্বয়ের প্রতীক। এটি মঙ্গলকারী, আনন্দ, সন্তোষ এবং তৃপ্তির বৈশিষ্ট্য। মোক্ষলাভ করার জন্য, মানুষ নিজের সত্ত্বগুণ বাড়াতে চায়।

মনে এবং শরীরে রজোগুণ এবং তমোগুণ হ্রাস করে সত্ত্বগুণ বৃদ্ধি করা সম্ভব। সাত্ত্বিক খাদ্য ভোজন করে বা যোগ অনুশীলন করে এবং একটি অহিংস জীবনযাপনের মাধ্যমে, নিজেকে প্রফুল্লচিত্ত লোকেদের সংসর্গে থেকে এবং এমন কার্যে নিজেকে নিবিষ্ট করে যা আপনাকে এবং অন্যদের আনন্দ প্রদান করে।

রজোগুণ

রজোগুণ আবেগ, কর্ম, শক্তি এবং গতির প্রতীক। রজোগুণকে আসক্তি, কামনা, আশা এবং আকাঙ্ক্ষা চিহ্নিত

করা হয়।

যোগ অনুশীলন, ধ্যান, খাদ্য এবং জীবনযাত্রায় কিছু সাধারণ পরিবর্তনের মাধ্যমে রজোগুণ হ্রাস করা যায়।

তমোগুণ

তমোগুণ অশুদ্ধতা, আলস্য এবং অন্ধকারের প্রতীক। এটিকে অজ্ঞতার পরিণতি বলা হয় এবং এই গুণটি মানুষকে আধ্যাত্মিক পথে অগ্রসর হতে বাধা দেয়।

মন এবং শরীরে তামসিক তত্ত্বগুলি হ্রাস করার জন্য, তামসিক খাবার (যেমন মদিরা, মাংস, প্রসেসড খাবার) বা অনিয়মিততা (যেমন অতিরিক্ত খাওয়া, অতিরিক্ত ঘুম) এড়িয়ে চলা উচিত।

আমাদের সত্ত্বগুণ বৃদ্ধি করতে হবে এবং সচেতন প্রচেষ্টার মাধ্যমে তম থেকে রজ এবং রজ থেকে সত্ত্বগুণের দিকে যাওয়ার চেষ্টা করতে হবে। কাঙ্ক্ষিত গুণ কীভাবে বৃদ্ধি করা যেতে পারে, এই নিয়ে ১৭তম অধ্যায়ে আরও বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে।

কর্ম এবং কর্মফল

গীতার দ্বিতীয় অধ্যায়ের প্রসিদ্ধ ৪৭তম শ্লোকটিকে 'কর্মণ্যেৎবাধিকারন্তে, মা ফলেষু কদাচন', অধিকাংশ সময় ভুল ব্যাখ্যা করা হয় যে কোনো প্রত্যাশা ছাড়াই কর্ম সম্পাদন করা উচিত।

প্রকৃতপক্ষে, এই শ্লোকটির অর্থ হল আমাদের কেবলমাত্র কর্ম সম্পাদন করার অধিকার আছে কিন্তু কর্মের ফলের ওপর কোনো অধিকার নেই। এইভাবে, অতীত ও বর্তমানের কর্মের ভিত্তিতে আমরা কর্মফল প্রাপ্ত করি, 'যেমন বপন করি তেমনই ফল আমরা পাবো' - **as we sow so shall we reap**

সমস্ত কর্মফল হলো ইন্দ্রিয়ের বিষয়সমূহের (৫টি ইন্দ্রিয় ও মন) উপভোগ করার ফল। এই ইন্দ্রিয়গুলি ৩টি গুণের দ্বারা পুষ্ট হয় যার ফলে আকাঙ্ক্ষার জন্ম হয় যেগুলিকে গাছে নবগঠিত একটি কুঁড়ি বা শাখা প্রশাখার বিস্তার হিসাবে বর্ণনা করা যেতে পারে।

মানুষের রূপকে অশ্বথ গাছের অনুরূপ বলা যেতে পারে। মানব রূপে জীব কর্ম সম্পাদন করেন, যা হলো বৃক্ষকাণ্ড, এবং এর শাখাগুলি উর্ধ্বমুখী এবং নিম্নমুখী (অধঃ) উভয় দিকেই প্রসারিত হয়। অতীত এবং বর্তমান কালে জীব কি প্রকার কর্মে স্বয়ংকে নিবিষ্ট করেছিল সেই ভিত্তিতেই তার পুনর্জন্ম হয়।

যদি সে একটি ধর্মনিষ্ঠ জীবন অতিবাহিত করে, তবে পুনর্জন্মের সময়, সে উর্ধ্বগামী শাখায় চলে যায় যেখানে গন্ধর্ব, দেবতা ইত্যাদি উচ্চ প্রজাতি সমূহের বাসস্থান স্থিত রয়েছে। যদি কোনো জীবাণু অশুভ কর্মে লিপ্ত ছিল, তবে পরবর্তী জন্মে, সে নিম্নমুখী শাখায় অধঃপতিত হয়, যেখানে মনুষ্য, পশু-পাখি ইত্যাদি প্রাণীসমূহের বাসস্থান অবস্থিত।

যেমন অশ্বথ গাছের কুঁড়িগুলি গাছের ডালপালার মধ্যে অঙ্কুরিত হয়, ঠিক তেমনই ইন্দ্রিয়গুলি মানুষের মধ্যে আসক্তির প্রবণতা দেয়, বস্তুগত আনন্দের প্রতি তার আকাঙ্ক্ষা জাগিয়ে তোলে। এই আকাঙ্ক্ষাগুলি পূরণের জন্যই সকল জীব কর্ম সম্পাদন করে।

যে প্রকারে বৃক্ষের ডালপালা বেড়ে ওঠে, সেই প্রকারে মানুষের মনে আশা- আকাঙ্ক্ষাগুলি ক্রমশই বৃদ্ধি পেতে থাকে, সীমাহীন ভাবে প্রসারিত হতে থাকে। অবশেষে, জীব বস্তুগত আসক্তির বন্ধনে আরও জড়িয়ে পড়ে।

এই তিনটি গুণই (জাগতিক প্রবৃত্তি) হল আসক্তি বৃদ্ধির মূল উৎস এবং এই অসীম সংসারে জীবাণুর

সংসারের বন্ধনে জড়িয়ে পড়ার কারণ; যদিও আশা-আকাঙ্ক্ষাই এই সংসাররূপী বৃক্ষের সাথে আবদ্ধ হওয়ার মূল কারণ।

15.3

ন রূপমস্যেহ তথোপলভ্যতে,
নাস্তো ন চাদিন্ চ সংপ্রতিষ্ঠা।
অশ্বথমেনং(ম্) সুবিরূচমূলম্,
অসঙ্গশস্ত্রেণ দৃঢ়েন ছিত্বা।।3।।

এই সংসার-বৃক্ষের যেমন রূপ দেখা যায়, বিচার করলে তেমন উপলব্ধ হয় না; কারণ এর আদি-অন্ত বা স্থিতি কিছুই নেই। তাই এই সদৃচমূল জগৎ-সংসাররূপ অশ্বথবৃক্ষকে দৃঢ় অনাসক্তিরূপ শস্ত্রের দ্বারা ছেদন করে।।

সংসারবৃক্ষের প্রকৃতি

এই নশ্বর ভূবনে, বৃক্ষের স্বরূপ বা মূল রূপ পরিপূর্ণ রূপে বোঝা যায় না কারণ এই বৃক্ষের কোনো সীমা পরিসীমা নেই, এটি অনন্ত কারণ এর কোনো আরম্ভ নেই, এটি অনাদি। এর কোনো অধস্তন বা অবলম্বন নেই।

আত্মা বিশ্বরণশীল তার সৃষ্টির থেকে এবং এটির স্থিতি চিরন্তন। এটি নিজেকে সনাক্ত করতে পারে তার শারীরিক অবস্থানের এবং বস্তুগত সুখের অনুসন্ধানে জীব নানারকম কর্মে লিপ্ত হয়ে যায়। কখনো কখনো নিজের বস্তুগত ইচ্ছা পরিতৃপ্তির জন্য জেনেশুনে বা না জেনে অনেক খারাপ কর্মে নিয়োজিত হয়ে পড়ে। এতে আত্মার যাত্রা নিম্নমুখী হয়ে যায়। এবং এতে আত্মার পুনর্জন্ম নিম্ন যোগিতে বা অধঃ প্রাপ্তে হয়।

আবার কখনো জীব এই সংসার রূপী বৃক্ষের পত্রের প্রতি আকৃষ্ট হয় যেসবে নানারকম বেদের ধার্মিক আচার অনুষ্ঠান হয়ে থাকে। এতে অনেক ধার্মিক গুণাবলীর অধিকারী হয় জীব। বস্তুসুখের প্রবনতায় জীব এই প্রকার নানারকম ধর্মীয় অনুষ্ঠানে লিপ্ত হয়ে থাকে।

এই ধর্মীয় গুণাবলীর সাহায্যে জীব স্বর্গীয় আবাসের উর্ধ্বতন স্তরে পৌঁছাতে পারে কিন্তু একবার এই গুণাবলীর পূন্য ফল শেষ হয়ে যায় আবার তাদের নিচের স্তরে পাঠিয়ে দেয়া হয়, এই চক্র ক্রমাগত চলতে থাকে।

এইভাবে জীব উর্ধ্বতন স্তরে জন্ম নিতে পারে নিজের সৎ কর্মের কারণে --- জীবাত্মা মানব জীবন পেতে পারে ভালো খারাপ দুই কর্মের মিলিত প্রভাবে কিন্তু জীব খারাপ স্তরে জন্ম নিতে পারে জীবের খারাপ কর্মফলের জন্য।

সংসারের বিভিন্ন প্রকারের আবাস স্থল

বাহ্যজগতে ১৪ টি ভূবন ও লোক আছে। তাদের কর্ম অনুযায়ী, আত্মা এক লোক বা ভূবনের থেকে আরেক ভূবন বা লোকে বিচরণ করে।

ভূবন

হিন্দু বিশ্বতত্ত্বে ১৪ টি ভূবন (চতুর্দশ

ভূবন) -এর বিবরণ রয়েছে। প্রথম আটটিতে মানুষের চেয়ে উচ্চ স্তরের প্রাণীরা বাস করে, নবমে মানুষ, দশে চতুষ্পদ প্রাণীরা, একাদশে পক্ষী, দ্বাদশে সরীসৃপ, ত্রয়োদশে পতঙ্গ, শেষ ও চতুর্দশে গাছপালা।

লোক

শাস্ত্রে চতুর্দশ লোকেরও বর্ণনা আছে। ওপরে সাতটিকে ব্যাহতি বলা হয়, আর নিচের সাতটিকে পাতাল।

- সত্য লোক (বা 'ব্রহ্মা লোক'): ব্রহ্মার ধাম
- তপলোক: মুনিদের ধাম
- জনলোক: চতুর্কুমারের ধাম
- মহর্লোক: অন্য মুনিদের ধাম
- স্বর্গলোক: দেবতাদের ধাম
- ভুবর্লোক: ভূতপ্রেতদের ধাম
- ভূলোক: পৃথিবী
- অতল লোক: মায়ার পুত্র বলের দ্বারা শাসিত
- বিতল লোক: শিবের গণের ধাম
- সুতল লোক: বালী ও বামন অবতারের ধাম
- তলাতল লোক: ময়ের ধাম
- মহাতাল লোক: নাগ লোক
- রসাতল লোক: শেষনাগের ধাম
- পাতাল লোক: নাগ ও অন্য প্রাণীদের ধাম

পরমেশ্বর লাভ

জন্মমৃত্যুর চক্র যুগ যুগ ধরে চলে আসছে, এবং চলতেও থাকবে। যেহেতু সংসার বৃক্ষ মাপা সম্ভব না (immeasurable) এবং অনন্ত, ভিত্তিহীন কিন্তু দৃঢ়ভাবে স্থাপিত, তাই এই বাঁধন থেকে মুক্তি পাওয়ার একমাত্র উপায় অনাসক্তি - detachment.

অনাসক্তি অভ্যাস

জীবাত্মার অশেষ কষ্টের মুক্তি আছে **অসঙ্গ**-এ, অর্থাৎ অনাসক্তিতে। অনাসক্তি হলো কুঠার প্রকৃতির, যা তিনটি গুণ দ্বারা পুষ্ট কামের শিকড়কে ছিন্নভিন্ন করতে পারে। ভগবান বলেছেন যে এই কুঠার আমাদের অস্ত্র হতে পারে যদি আমাদের আত্মজ্ঞান থাকে।

এই সংসারে থাকাকালীন পরমধাম লাভের জন্য কি করবেন?

একটি মাত্র লক্ষ্যে স্থির থেকে কি করে অনাসক্তি অনুভব করা যায় তা নিয়ে এই সুন্দর গল্প আছে।

শুকদেব এবং তেলের কলসীর গল্প

অনাসক্তি এবং মোক্ষের পথ সম্পর্কে অন্তর্দৃষ্টি পেতে, একবার শুকদেব মিথিলা নগরে উপস্থিত হন। রাজা জনক প্রজ্ঞা ও ধার্মিকতার জন্য অতি পরিচিত ছিলেন বলে তাকে রাজখাষিও বলা হত।

শিক্ষার জন্য তিনি শুকদেবকে তার হাতে কানায় কানায় তেল ভর্তি একটি পাত্র ধরে, উৎসবের সময় শহরের একটি প্রদক্ষিণ বা পরিক্রমা করার দায়িত্ব অর্পণ করেছিলেন। সেখানে শুকদেবকে সতর্ক করা হয়েছিল যে পাত্র থেকে তেল এক ফোঁটাও যেন ছিটকে না যায়।

পরিক্রমা শেষ করে ফেরার সময় রাজা জনক তাকে মিথিলার দৃশ্য নিয়ে প্রশ্ন করতে শুকদেব কিংকর্তব্যবিমূঢ় হয়ে বললেন যে তিনি তেলের পাত্র লক্ষ করতে ব্যস্ত ছিলেন; অন্য কোথাও দেখার চিন্তাই করেননি।

শুনে রাজা জনক হাসলেন এবং কিছু উপদেশ দিলেন। মোক্ষের পথে চলার জন্য, এবং পরমেশ্বরের সাথে মিলনের লক্ষ্যে তিনি যেন এই বিষয়ে সম্পূর্ণরূপে মনোনিবেশ করেন। এর ফলে তাকে ইন্দ্রিয় এবং কর্মফলের কারণে সৃষ্ট

কোনও বিভ্রান্তি এই সংসারের পথে বাধা দেবে না।

এইভাবে, জীব সৃষ্টির প্রকৃতি ব্যাখ্যা করা হয়েছে, যেখানে কেউ মূল জ্ঞান লাভ করলে, আর তারা কখনই এই অস্থায়ী জড় জগতে ফিরে আসবে না।

15.4

ততঃ(ফ) পদং(ন্)তৎপরিমর্গিতব্যং(য়ঁ),
য়স্মিন্গতা ন নিবর্তন্তি ভূয়ঃ।
তমেব চাদ্যং(ম্) পুরুষং(ম্) প্রপদ্যে,
য়তঃ(ফ) প্রবৃত্তিঃ(ফ) প্রসূতা পুরাণী॥15.4॥

তারপর সেই পরমপদ পরমাত্মা, যাঁকে প্রাপ্ত হলে মানুষ আর ইহজগতে ফিরে আসে না এবং যাঁর হতে অনাদিকাল থেকে এই সৃষ্টি বিস্তারলাভ করেছে—‘আমি সেই আদি পুরুষ পরমাত্মার শরণ গ্রহণ করি’ এই বলে তাঁর অন্বেষণ করতে হয়। ৪ ॥

পরমাত্মা প্রাপ্তি

একাগ্র ভাবে মনোনিবেশ এবং ভক্তিভাব

বৈরাগ্যরূপী কুঠার দিয়ে সংসার বৃক্ষের শিকড়কে কেটে ফেলতে হবে এবং তার পরবর্তী পদক্ষেপটি হলো, ভগবান (পুরুষোত্তম, যাকে বিভিন্ন গ্রন্থে আদিপুরুষ হিসাবে বর্ণনা করা হয়েছে), তাঁর প্রতি একান্তচিত্তে মনোনিবেশ করা। তিনিই সৃষ্টির উৎস এবং তিনিই সৃষ্টি।

মনুষ্যকে বুঝতে হবে যে সংসাররূপী বৃক্ষের মোহ রূপী ক্ষণস্থায়ী মূলের সন্ধান করতে হলে তাকে অবশ্যই ভগবানের আশ্রয়ে যেতে হবে এবং ভক্তিভরে তাঁর উপাসনা করতে হবে। তাঁর কাছ থেকেই এই যে জড় জগৎ, যার কোনো আদি নেই, এ ভগবানের দ্বারাই বিস্তৃত হয়েছে, তাই ভক্তি সহকারে তাঁকে অন্বেষণ করাই একমাত্র কর্তব্য।

জীবাত্মা যখন তাঁর কাছে পৌঁছায়, তখন সে এই জড়-জগতের বন্ধন থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে যায় এবং সংসাররূপী ভবসাগর থেকে চিরতরে মুক্ত হয়ে যায়।

তাই মনুষ্যের, সেই পরমধামে (পরমেশ্বরের চূড়ান্ত নিবাস) পৌঁছানোই, একমাত্র লক্ষ্য হওয়া উচিত।

15.5

নির্মানমোহা জিতসঙ্গদোষা,
অধ্যাত্মনিত্যা বিনিবৃত্তকামাঃ।
দ্বন্দ্বৈর্বিমুক্তাঃ(স্) সুখদুঃখসংজৈঃ,
গচ্ছন্ত্যমৃতাঃ(ফ) পদমব্যয়ং(ন্) তত্।।5।।

যাঁরা অভিমান ও মোহবর্জিত হয়েছেন, যাঁরা সাংসারিক আসক্তিজনিত দোষগুলি জয় করেছেন, যাঁরা নিত্য পরমাত্মতত্ত্বে প্রতিষ্ঠিত, যাঁরা (স্বদৃষ্টিতে) সমস্ত কামনারহিত হয়েছেন, যাঁরা সুখ-দুঃখরূপ দ্বন্দ্ব হতে মুক্ত, এরূপ (উচ্চ স্থিতিসম্পন্ন) মোহরহিত সাধক ভক্তগণ সেই অবিনাশী পরমপদ পরমাত্মাকে প্রাপ্ত হন ॥ ৫ ॥

ভগবদপ্রাপ্তি

এই শ্লোকে যোগেশ্বর ভগবান বলেছেন সংসারবৃক্ষের শিকড়ের যে মূল, সেই পরমাত্মার কাছে আত্মসমর্পণ কি করে করতে হয়।

তাঁকে পেতে যা যা গুণ প্রয়োজন -

মন ও ইন্দ্রিয়কে বশ করার জন্য অভ্যাস করে যেতে হবে।

নির্মানমোহা

অহংকার ও মোহ থেকে মুক্ত। প্রথম ধাপ অজ্ঞতা থেকে উৎপন্ন অহংকারকে ত্যাগ করা। জীবাত্মার ভ্রম হয় যে সেই সব ধন সম্পত্তির মালিক, এই ভেবে আরও ধন অর্জন করতে চায়।

তাদের মনে অহংকারের আচ্ছাদন পড়ে যায়, এবং তারা ভাবে সবই তাদের আমোদের জন্য। তারা ভগবানকে সব কিছুর অধীশ্বর বলে মানেনা। তার তাঁর ইচ্ছায় সমর্পণও করতে পারে না।

জিতসঙ্গদোষা

'আমি' ও 'আমার' ভাব যখন কমে আসে, তখনই অন্বেষক তার আসক্তি খুঁজে তা দূর করতে পারে।

অধ্যাত্মনিত্যা

সর্বদা ধ্যানের মাধ্যমে আধ্যাত্মিকতা অনুশীলন করা এবং 'সৎ, চিৎ, আনন্দ রূপ'-এ তাঁর সম্পর্কে চিন্তা করা উচিত। নিজেকে তাঁর অংশ মনে করলে কামনা, ক্রোধ, লোভ, হিংসা ও অহঙ্কারের উপর পূর্ণ নিয়ন্ত্রণ থাকে।

বিনিবৃত্তকামাঃ

যে তার সমস্ত কামকে জয় করেছে।

দ্বন্দ্বৈর্বিমুক্তাঃ

সমস্ত দ্বৈততা থেকে মুক্ত - বিপরীত তত্ত্ব যেমন ভাল-মন্দ; লাভ-ক্ষতি; সুখ-দুঃখ; আনন্দ ও বেদনা; ধর্ম ও অধর্ম, ইত্যাদি।

অবিচল চেষ্টার দ্বারা যার এই সকল গুণ বিকশিত হয়, সে তার চূড়ান্ত লক্ষ্যে পৌঁছাতে সফল হয়, পরম সত্ত্বাকে প্রাপ্ত করে এবং তাঁর শাস্বত ধামে প্রবেশ করে।

15.6

**ন তদ্ভাসয়তে সূর্যো, ন শশাঙ্কো ন পাবকঃ
য়দগত্বা ন নিবর্তন্তে, তদ্ধাম পরমং(ম্) মম॥৬॥**

সেই পরমপদকে সূর্য, চন্দ্র বা অগ্নি প্রকাশিত করতে পারে না এবং যাকে প্রাপ্ত হলে জীব আর সংসারে ফিরে আসে না, সেইটিই আমার পরম ধাম ॥ ৬।

পরম ধাম: পরমাত্মার চির আবাস

আত্মা পরমাত্মার একটি অংশ। আত্মার লক্ষ্য পরম ধামে পৌঁছে, পরমাত্মায় বিলীন হওয়া। আর এই সংসারে না ফেরা।

এই পরম ধাম বর্ণিত হয়েছে নিজ আলোয় আলোকিত হিসেবে, সূর্য চন্দ্র ও অগ্নি ছাড়াই। সেই উৎসের নাম চেতন তত্ত্ব।

উপনিষদেও পরম ধামের বিস্তৃত ব্যাখ্যা আছে -

কঠোপনিষদের ২য় অধ্যায়ের পঞ্চদশতম শ্লোক বা মুণ্ডকোপনিষদের ২য় অধ্যায়ের একাদশতম শ্লোক অনুযায়ী -

ন তত্র সূর্যো ভাতি ন চন্দ্রতারণং নেমা বিদ্যুতো ভান্ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

সেখানে সূর্য চন্দ্র ও নক্ষত্রের কোনো কিছুই প্রভা অর্থাৎ ঔজ্জ্বল্য চোখে পড়ে না, বিদ্যুৎ সেখানে চমকায় না, অগ্নি সেখানে আলোকিত করে না। সেখানের উজ্জ্বলতার উৎস শুধুমাত্র ভগবান এবং সমগ্র জগৎ তাঁরই আলোয় আলোকিত।

যদি এই সম্পর্ক, যা সব দুঃখের কারণ, ত্যাগ করা যায় তাহলে মানুষ আর জন্মমৃত্যুর চক্রে, সংসারের চক্রে পড়বে না। এটাই মোক্ষ।

এটাই ঈশ্বরের ধাম, আত্মোপলব্ধি স্থান, মোক্ষ ধাম। এটা যার জ্ঞাত, সে বলতে পারে -

अहम् ब्रह्मास्मि (বৃহদারণ্যক উপনিষদ ১.৪.১০, যজুর বেদ)

সেই অবস্থায় পৌঁছে মোক্ষপ্রাপ্ত ব্যক্তি আর অজ্ঞতার স্থিতিতে ফিরে আসে না। শরীর, মন, বুদ্ধি ও সংসারের সাথে কোনো মোহ বাঁধন তৈরী হয় না।

দ্বৈত, বিপরীত তত্ত্ব, দ্বন্দ্ব সবই এই জগৎ। মোক্ষপ্রাপ্ত মানুষকে সুখদুঃখ, আনন্দ-যন্ত্রণা, শত্রু-মিত্র কিছুই ভোলাতে পারে না।

এই স্থিতিই মোক্ষ। একে সৎ-চিৎ-আনন্দ (শান্তি, জ্ঞান ও চিরন্তনতায় পূর্ণ) বলা হয়।

15.7

ममैवांशो जीवलोक, जीवभूतः(स्) सनातनः

मनः(ष्) षष्ठानीन्द्रियाणि, प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥7॥

এই জগতে আমারই সনাতন অংশ জীবরূপে অবস্থিত ; কিন্তু সে প্রকৃতিতে অবস্থিত হয়ে মন ও পঞ্চ ইন্দ্রিয়কে আকর্ষিত করে (নিজের বলে মেনে নেয়) ॥ ৭ ॥

জীবাত্মা, পরমাত্মা এবং সংসারের মধ্যে সম্পর্ক

পূর্ববর্তী শ্লোকে যোগেশ্বর (শ্রীভগবান) বুঝিয়েছিলেন যে, আত্মতত্ত্বে নিষ্ঠাবান সংসারী জীব যারা শ্রীভগবানের অব্যয়যোগ তথা তত্ত্বত তাঁকে জেনেছেন এবং তাঁর পরমধামে গমন করেছেন সেই সাধকগণ এই পার্থিব জগতে কখনও প্রত্যাবর্তন করেন না। আর, এই শ্লোকে বলা হচ্ছে যারা জড় জগতে অর্থাৎ এই সংসারে অবস্থান করছেন তারাও পরমাত্মারই অংশ।

আমাদের ধর্মগ্রন্থের শব্দাবলী বোঝার সময় একজনকে অবশ্যই সজাগ থাকতে হবে।

উদাহরণ

তাঁর পরমধামকে (বাসস্থানকে) সনাতন হিসাবে বর্ণনা করা হয়েছে অর্থাৎ যা চিরন্তন এবং যা'র উৎস অজানা; যদিও যা পুরাতন হয়, তা বহু প্রাচীন হলেও তার উৎস জানা থাকে।

ভগবান বলেছেন যে জীবাত্মা তাঁরই অংশ। অজ্ঞতার কারণে সে (জীবাত্মা) নিজেকে প্রকৃতির সাথে আবদ্ধ বলে মনে করে। প্রকৃতির সাথে পরিচয়ের মাধ্যমেই সে পঞ্চেন্দ্রিয় এবং মনকে বিকশিত করে।

জীব তার প্রকৃত স্বরূপ যা অসীম, এ সম্পর্কে অবিদিত থাকার জন্য তার সীমাবদ্ধতা দূর করার লক্ষ্যে স্বার্থপর আশা ও আকাঙ্ক্ষা লালন করে। সেই কারণেই তার প্রকৃতির সাথে যোগাযোগ এবং সম্পর্ক স্থাপন করার জন্য প্রতিনিয়ত সংগ্রাম করে যেতে হয়। প্রকৃতির সাথে সম্পর্ক স্থাপন করার জন্য প্রয়োজনীয় উপায়গুলি হলো মন এবং পঞ্চেন্দ্রিয়। অতএব, জীবাত্মা প্রকৃতির এই মন সহ ছয়টি ইন্দ্রিয়কে নিজের দিকে আকর্ষণ করে বা টানে।

প্রকৃতির সাথে তার পরিচয়ের কারণে, জীবাত্মাকে কর্তা বলা হয়—যিনি ভোগ করেন। যখন ইন্দ্রিয় ও মনের এই সীমাবদ্ধ ক্ষমতাগুলি দূর হয়ে যায়, তখন জীবাত্মা পরমাত্মার সাথে এক হয়ে যায়।

15.8

শরীরং(য়ঁ) যদবাপ্নোতি, যচ্চাপ্যুৎক্রামতীশ্বরঃ। গৃহীত্বৈতানি সংযাতি, বায়ুর্গন্ধানিবাশয়াৎ ॥15.8॥

বায়ু যেমন গন্ধের স্থান থেকে গন্ধ গ্রহণ করে নিয়ে যায়, তেমনই শরীরের অধিপতি জীবাত্মাও একটি দেহ পরিত্যাগ করার কালে মন সহ ইন্দ্রিয়াদিকে সঙ্গে নিয়ে অন্য দেহকে আশ্রয় করে। ৮ ॥

জীবাত্মার স্বরূপ

আত্মার গতিপথ নিয়ে এই শ্লোকে বলা হয়েছে।

দ্বিতীয় অধ্যায়ের বাইশতম শ্লোকে ভগবান আত্মার আর শরীরের প্রকৃতির কথা বলেন -

বাসাংসি জীর্ণানি যথা বিহায় নবানি গৃহ্নাতি নরোহপরাণি ।

তথা শরীরানি বিহায় জীর্ণান্যন্যানি সংযাতি নবানি দেহী ॥২.২২ ॥

নরগণ যে প্রকারে জীর্ণ বস্ত্র ত্যাগ করে নতুন বস্ত্র ধারণ করে, আত্মাও শরীরের মৃত্যুতে জীর্ণ শরীর ত্যাগ করে নতুন শরীর গ্রহণ করে।

পরমেশ্বর আত্মার স্বরূপ আর প্রারন্ধ (কর্ম ও কর্মফল) বর্ণনা করেছেন। আত্মা শুদ্ধ, লৌকিক গুণে প্রভাবিত হয় না। আত্মা শরীর ত্যাগ করলে নতুন শরীর পায়।

আত্মাকে লৌকিক বুদ্ধি দিয়ে বোঝা সম্ভব নয়, কারণ পরমাত্মা অলৌকিক বুদ্ধি ব্যবহার করেছেন জীবাত্মাকে গড়তে। আত্মার যখন দেহান্তর হয় তখন আত্মা শুধু কর্মফল নিয়ে যায়, আত্মার কর্মের প্রতি কোনো আসক্তি থাকে না। যেমন হাওয়া ফুলের সুবাস বয়ে নিয়ে যায়, কিন্তু সুবাসের প্রতি তার কোনো আসক্তি নেই।

নবম শ্লোক থেকে পরমাত্মার প্রকৃতির বিস্তারিত ব্যাখ্যা করা হয়েছে এবং কিভাবে তা স্থূল জগতের সাথে সুক্ষ্ম জগৎকে সংযুক্ত করেছে সেই তথ্য ব্যাখ্যা করা হয়েছে। আমরা পরের বিবেচনে এই নিয়ে আলোচনা করবো।

হরি নাম সংকীর্তনের মাধ্যমে এই সুন্দর বিবেচনাটি সমাপন হলো ।



আমাদের বিশ্বাস যে আপনার এই বিবেচনাটি পড়ে ভালো লেগেছে। দয়া করে নিম্নে দেওয়া লিঙ্কটি ব্যবহার করে
আপনার মূল্যবান মতামত দিন -

<https://vivechan.learngeeta.com/feedback/>

বিবেচন সারটি পড়ার জন্য, অনেক ধন্যবাদ!

আমরা সকল গীতা সেবী, এক অতুলনীয় প্রত্যাশা নিয়ে, বিবেচনের অংশগুলি বিশুদ্ধ ভাবে আপনার কাছে পৌঁছানোর
প্রচেষ্টা রাখি। কোনো বানান বা ভাষারগত ত্রুটির জন্য আমরা ক্ষমাপ্রার্থী।

জয় শ্রীকৃষ্ণ!

সংকলন: গীতাপরিবার – রচনাশ্রম লেখন বিভাগ

প্রতি ঘরে গীতা, প্রতি হাতে গীতা!!

আসুন আমরা সবাই গীতা পরিবারের এই ধ্যেয় মন্ত্রের সাথে যুক্ত হয়ে নিজেদের পরিচিত বন্ধুবান্ধবদের গীতাশ্রেণী
উপহার হিসাবে পাঠাই।

<https://gift.learngeeta.com/>

গীতা পরিবার একটি নতুন উদ্যোগ নিয়েছে। এখন আপনি পূর্বে পরিচালিত সমস্ত ব্যাখ্যার (বিবেচনের) ইউটিউব ভিডিও
দেখতে পারেন এবং PDF পড়তে পারেন। অনুগ্রহ করে নিচের লিঙ্কটি ব্যবহার করুন।

<https://vivechan.learngeeta.com/>

॥ গীতা পড়ুন, পড়ান, জীবনে গ্রহণ করুন ॥

॥ ॐ শ্রীকৃষ্ণার্ণমস্তু ॥